भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2765
18 मार्च, 2025 को उत्तरार्थ

विषय: आंध्र प्रदेश में सूक्ष्म सिंचाई का कार्यान्वयन

2765. श्री मड्डीला गुरूमूर्तिः

क्या कृषि और किसान कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले में सूक्ष्म सिंचाई की प्रगति का विशेष ध्यान रखते हुए इसके कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति क्या है;

(ख) तिरुपति जिले में सूक्ष्म सिंचाई प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए छोटे और सीमांत किसानों और विशेषकर अल्पसंख्यक समुदायों के किसानों को प्रदान की गई वित्तीय सहायता एवं लाभार्थियों का ब्यौरा क्या है;

(ग) क्या आंध्र प्रदेश के जल-संकटग्रस्त क्षेत्रों में कम पानी खपत वाली फसलों को बढ़ावा देने की सरकार की कोई योजना है; और

(घ) कृषि में संधारणीय जल उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए क्या विशेष पहल की जा रही है, यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री (श्री रामनाथ ठाकुर)

(क): प्रति बूंद अधिक फसल (पी.डी.एम.सी.) योजना वर्ष 2015-16 से आंध्र प्रदेश राज्य सहित पूरे देश में कार्यान्वित की जा रही है। योजना के प्रारंभ से लेकर अब तक, 96.97 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को सूक्ष्म सिंचाई के अंतर्गत कवर किया गया है जिसमें आंध्र प्रदेश के तिरुपति जिले का 20,819 हेक्टेयर क्षेत्र शामिल है।

(ख): पी.डी.एम.सी. योजना के तहत, छोटे और सीमांत किसानों तथा अन्य किसानों को इकाई लागत के क्रमशः 55% और 45% की दर से सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली स्थापित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है जिसमें अल्पसंख्यक समुदाय सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त, आंध्र प्रदेश सरकार, किसानों को सूक्ष्म सिंचाई अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अतिरिक्त/टॉप-अप सब्सिडी प्रदान करती है।

आंध्र प्रदेश सरकार की रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2015-16 से अब तक, तिरुपति जिले में इस योजना के तहत 19,272 किसान लाभान्वित हुए हैं ।

(ग): आंध्र प्रदेश सरकार की रिपोर्ट के अनुसार, फसल विविधीकरण कार्यक्रम के तहत वर्ष 2022-23 से 2024-25 तक बोरवेल के तहत धान और तंबाकू की 14,332 हेक्टेयर भूमि को दलहन, मिलेट्स, मक्का और तिलहन की खेती हेतु प्रयोग किया गया है जिसके लिए 138.48 लाख रुपये की वित्तीय सहायता दी गई है। पानी की कम खपत वाली फसलों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं जिसमें मिलेट्स और दलहन जैसी जल कुशल फसलों को बढ़ावा देना, अच्छी कृषि पद्धतियों पर क्लस्टर प्रदर्शन, प्रमाणित बीजों का वितरण, प्रमाणित बीजों का उत्पादन, मृदा और वनस्पति संरक्षण प्रबंधन के लिए इनपुट का वितरण, मिलेट प्रसंस्करण इकाइयों की स्थापना,

कार्यशालाओं का आयोजन, मिनी आटा मिलों की आपूर्ति और फसलोपरांत प्रबंधन/मूल्य संवर्धन आदि पर प्रशिक्षण शामिल हैं।

(घ): भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अखिल भारतीय समन्वित कार्यक्रमों, संघ मंचों और के.वी.के. के माध्यम से सूक्ष्म सिंचाई के अनुसंधान और संवर्धन में लगी हुई है। आई.सी.ए.आर. ने देश के विभिन्न एग्रो-ईकोलॉजिकल क्षेत्रों में विभिन्न फसलों के लिए इष्टतम ड्रिप इरिगेशन (सूक्ष्म सिंचाई) कार्यक्रम विकसित किया है। इसके अतिरिक्त, पानी के कुशल उपयोग के लिए 24 फसलों हेतु ड्रिप फर्टिगेशन कार्यक्रम विकसित किए गए हैं जिससे सूक्ष्म सिंचाई के तहत अधिक से अधिक क्षेत्र को कवर किया जा सके। आई.सी.ए.आर., इन सभी पहलुओं पर किसानों, प्रशासकों और अन्य स्टेकहोल्डर्स को शिक्षित करने के लिए प्रशिक्षण देता है और फील्ड प्रदर्शन भी आयोजित करता है।

आई.सी.ए.आर. ने वर्षा जल संचयन और पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग), पानी का बहुविध उपयोग, वर्षा, सतही और भूजल संसाधनों का संयुक्त उपयोग, सिंचाई और कृषि पद्धतियों के लिए स्मार्ट और सटीक तकनीकें, इष्टतम सिंचाई समय-सारिणी, संसाधन संरक्षण तकनीकें, भूमि जल निकासी का विकास और सिंचाई जल दक्षता एवं जल उत्पादकता बढ़ाने के लिए समस्याग्रस्त भूमि सुधार आदि के माध्यम से लागत प्रभावी, स्थान विशेष वैज्ञानिक तकनीकें विकसित की हैं। इन्हें कृषक समुदाय के बीच लोकप्रिय बनाया जा रहा है।

*****